HINDUSTAN, DATE-20.11.2018, PAGE NO.-17.

झारखंड बाल फिल्म महोत्सव

- सीयूजे और यूनिसेफ ने की बच
- दो दिवसीय महोत्सव में बच्चों के

कब तक बड़ों की फिल्में

रांची | वरीय संवाददाता

दो दिवसीय झारखंड फिल्म महोत्सव का शुभारंभ सोमवार को झारखंड केंद्रीय विश्वविद्यालय में हुआ। इसका आयोजन सीयूजे और यूनिसेफ के तत्वावधान में किया जा रहा है।

कार्यक्रम में विवि के जनसंचार विभागाध्यक्ष डॉ देव व्रत सिंह ने कहा कि कहा कि बच्चों के लिए बनने वाली फिल्मों की कमी के कारण बच्चे वयस्कों की फिल्में और विदेशी कार्टून देख रहे हैं। कब तक बच्चे बड़ों की फिल्में देखते रहेंगे। उन्होंने कहा कि साल में सबसे ज्यादा फिल्में बनाने वाली बॉलीवुड भी इस जोनर की फिल्में नहीं बनाती है।

कार्यक्रम में यूनिसेफ की प्रतिनिधि मो[illegible]वा ने कहा कि 20 नवंबर को अंतरराष्ट्रीय बाल दिवस है, जो बाल अधिकारों को संयुक्त राष्ट्र संघ की तरफ से स्वीकृति मिलने के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। ऐसे में इस तरह का आयोजन मायने रखता है।

बतौर मुख्य अतिथि केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति नंद कुमार यादव इंदु शामिल हुए। यहां कार्यक्रम की मुख्य वक्ता और फिल्म निर्माता बाटुल मुख्तियार ने कहा कि बच्चों के लिए बनने वाली फिल्मों में भी हर पहलू का समावेश होता है। ऐसी फिल्मों में कठोर मुद्दों को भी मासूमियत के साथ पेश किया जाता है।

बतौर वक्ता चिल्ड्रेन फिल्म सोसाइटी इंडिया के प्रतिनिधि राजेश गोहिल, फिल्म निर्माता बाटुल मुख्तियार, कॉलेज के जनसंचार विभाग के विभागाध्यक्ष देवव्रत सिंह व यूनिसेफ की प्रतिनिधि मोयरा दावा शामिल हुईं।

उभरे विचार

परिचर्चा में इंडियन फिल्म सोसाइटी के राजेश गोहिल ने कहा कि इस तरह के आयोजनों का उद्देश्य बच्चों को उनके अधिकार के प्रति जागरूक करना है। फिल्म से मनोरंजन के साथ-साथ परिवार-दोस्ती का महत्व बताने का प्रयास करते हैं।

केंद्रीय विश्वविद्यालय के सभागार में झारखंड बाल फिल्म महोत्सव के शुभारंभ में फिल्म !

बचपन की शरारतों को स्क्रीन पर देख चहक उठे नन्हे चेहरे

पहले दिन महोत्सव में बाटुल मुख्तियार की कफल, अमोल गुप्ते का स्टेनले का डब्बा फिल्में दिखायी गयीं। 90-90 मिनट की इन फिल्मों में स्क्रीन पर बच्चों की शरारतों को दिखाया जा रहा था। अंधेरे सभागार में सफेद प्रोजेक्टर काल्पनिक पात्र भले लोगों का मनोरंजन कर रहे थे, लेकिन उस हॉल की कुर्सियों पर बैठे बच्चों की चाहत, सपने और ख्वाहिशें पूरी हो रही थीं। अल्हड़ से ठहाकों, गड़गड़ाती तालियों की शक्ल में सीन-दर सीन इनकी खुशियां झलक कर बाहर आ रही थीं। यहां मौजूद सैकड़ों बच्चे विभिन्न प्रखंडों के सरकारी स्कूल के थे।

मदद और सम्मान का भाव

बच्चे जब इस हॉल से निकले तब उनके चेहरे पर केवल खुशियां ही नहीं थी। वह अपने साथ कई काम की बातें भी साथ ले जा रहे थे। यह पूछने पर फिल्म से उन्होंने क्या सीखा तो पूजा तपाक से बोलती है कि हमें समाज में भेदभाव नहीं करना चाहिए। हमें हर किसी की मदद करनी चाहिए। रोशनी कहती है कि गांव कि हमें अपने बड़ों का सम्मान करना चाहिए।

सोमवार को सीयूजे सभागार में बाल फिल्म महोत्सव का उद्घाटन करते अतिथि।

सीयूजे परिसर में झारखंड बाल फिल्म महोत्सव के दौरान बने फिल्म के सेट देखते ग्रामीण इलाकों के स्कूली बच्चे।

ोगिता के बाद पुरस्कार व अतिथियों के साथ

एसएस डोरंडा बालिका उवि प्रथम, रवि शंकर राम बाल कृष्णा प्लस टू विद्यालय द्वितीय और रानी मुंडा केजीबीवी बुढ़मू तृतीय रही।

वाद्ययंत्र प्रस्तुति प्रतियोगिता में केजीबीवी सिल्ली की हेमली कुमारी ने ढोलक की प्रस्तुति देकर प्रथम चुनी गई। वही जिला स्कूल रांची के संदीप

आईएमएस में विशेष व्याख्यान

रांची। रांची विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज में सोमवार को विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। मूल्य निर्धारण और विपणन विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में मुख्य वक्ता डीकेएसएच, मुंबई की बिजनेस मैनेजर प्रियंका मिश्रा ने विस्तार से चर्चा की। उन्होंने प्रबंधन के विद्यार्थियों को विपणन, प्रबंधन, खुदरा व वितरण संबंधी कई नई जानकारियां दीं। विद्यार्थियों ने विषय से संबंधित कई सवाल भी पूछे जिनके जवाब उन्होंने दिए। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सीवीएस क निदेशक डॉ अशोक कुमार चौधरी, आईएमएस के निदेशक डॉ सतीश चंद्र गुप्ता समेत अन्य शिक्षकगण व बड़ी संख्या मे विद्यार्थी मौजूद थे।

आज स्थगित रहेंगी कक्षाएं : आईएमएस में मंगलवार को युवा महोत्सव होगा। इससे सभी कक्षाएं स्थगित रहेंगी। यह जानकारी संस्थान के निदेशक डॉ सतीश चंद्र गुप्ता ने दी।

क्लास में पु

रांची | प्रमुख संवाददाता

मारवाड़ी कॉलेज में पुलिस को ठहराने की व्यवस्था का विद्यार्थियों और आजस ने विरोध किया। इस संबंध में एक ज्ञापन भी सोमवार को प्राचार्य डॉ एएन ओझा को सौंपा गया। शहर की सुरक्षा व्यवस्था को लेकर पुलिस को ठहराने की व्यवस्था कॉलेज में की जाती रही है।

विद्यार्थियों का आपत्ति इस बात को लेकर थी कि जो कमरे पुलिस को ठहराने के लिए दिए गए थे, वे खाली